International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित नारी

डॉ कृष्णा देवी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

मैत्रेयी पुष्पा बीसवीं सदी के दसवें दशक के हिन्दी कथा साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर हैं। 1994 में इदन्नमम उपन्यास के माध्यम से समूचे साहित्य जगत को अपनी मौलिक उद्भावना, गंभीर संवेदना तथा चेतना के साथ अभिभूत किया। उन्होंने कथ्यगत तथा शिल्पगत रूढ़ियों को तोड़ कर एक विश्लेषक दृष्टि का परिचय दियाहै। उनकी कहानियां नारी चेतना और नारी के अधिकारों तक ही सीमित नही हैं अपितु हाशिए पर फेंकी गई मानवीय अस्मिता को भी मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती दिखाई देती है। उन्होंने अपनी महानियों के माध्यम से नारी का उस स्थिति और स्वरूप की पड़ताल करने का प्रयास किया है, जिसमें उसे मानवाधिकारों से ही वंचित नही रखा गया अपितु चेतन होने के अवसरों से भी दूर रखा।

विवाह संस्था और नारी

नारी विवाह संस्था के छल का भी शिकार रही है। स्त्री–पुरूष के विवाह से परिवार अस्तित्व में आता है। परिवार एक ओर जहॉ व्यक्ति और समाज के द्वन्द्वात्मक सम्बन्धों को बनाए रखता है, वहीं पति–पत्नी के संबधों को भी व्यवस्था देता है परन्तु परम्परागत विवाह संस्था में स्त्री को 'पैसिव पार्टनर' माना जाता रहा है, जो विवाह को निभाने और उसे साथ करने के लिए पुरुष के मनोवाछित आचरण करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में विवाह और परिवार द्वारा पीड़ित नारी का यथार्थ चित्रण किया है, जो पाठक के दिल में गहरे उतर जाता है। 'मुस्कराती औरतें' की फूलकली मैड़म आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने पर भी पति के दुर्व्यवहार से त्रस्त है–''शादी की रातें पत्थर पर खुदी लकीरों की तरह होती हैं। उन लकीरों को कौन मिटा सकता है जबकि अपना भविष्य ही अस्तित्व ही पत्थर हो गया हो।''[1]

तलाक लेकर भी औरत स्वतंत्र नहीं हैं, उसे 'डायवोर्सी' की गाली को निगलना कठिन हो जाता है और शादी उसे सुरक्षा कचव लगने लगता है। औरत को मात्र सही माना जाता है। वह पराया धन है, जिसे पति को सौंप कर पिता मुक्त हो जाता है। संतानोत्पति के अभाव में भी दोषी स्त्री को ही माना जाता है क्योंकि पुरूष प्रधान समाज कर मानसिकता की रूग्ण है। 'मन नांहि दस बीस' की चन्दना को दस साल तक संतान न होने पर सास के लांछन सहने पड़ते हैं– कच्चे गोद पेट डाले होगे, फिर कहां से जनेगी पूत। हमारे ही करम खोटे थे कि ब्याह लाए छिनाल को।''[2]

विवाह संस्था के कठोर नियम कि विवाह समजातीय ही होगा, में अनेक नारियां पिसती हैं और हंसती–खेलती जिन्दगी नरक बन जाती है। 'ताला खुला है पापा' की बिन्दो निधन जाति के अरविन्द से प्रेम करती है। पापा को समझाने की बहुत कोशिश की पर उसकी सुनवाई नहीं हुई और उसे अंधेरी कोठरी में बंद कर गया। इसी प्रकार 'पिचरी का सपना' की रति तिवारी कॉलेज के लड़के मुकुंद माधव से प्रेम करती है, जोकि मजदूर का बेटा है। परिणामस्वरूप रति का कॉलेज छुड़वा कर किसी अन्य जगह विवाह कर दिया और रति का मुकुंद के साथ रह कर समाज सेवा का सपना विवाह संस्था और परम्पराओं की बलि चढ़ गया।

मैत्रेयी पुष्पा ने विवाह की अहम् समस्या दहेज को सामाजिक नासूर माना है, जिसने भयभीत कर दिया है कि बेटी पैदा होना ही अपराध है। इसी दहेज रूपी राक्षस का षिकार 'सांप–सीढ़ी' के सुरजन सिंह और उसकी बेटी 'रज्जों' भी। रज्जो के ससुर ने अपना असली रूप विवाह के समय दिखाया– ''एक लाख के बिना भाँवर नहीं पड़ेगी और पचास हजार के बिना विदा नहीं होगी।''[3]

परन्तु विवाह संस्था के दोहरे मापदंडो के विरोध में भी मैत्रेयी की नारी खड़ी दिखाई देती है। 'बारहवी रात' में धमना वालों की बेटी इसलिए विवाह करने से इंकार कर देती है।

क्योंकि वर अपनी पूर्व पत्नी की हत्या का आरोपी है। वह बता देती है– ''दद्हा हमें कुवांरा रहना मंजूर है, कत्ल होने उनके घर नहीं।''[4]

विवाह आपसी मेल–मिलाप से ज्यादा पवित्रता का सवाल बना हुआ है।

पवित्रता के घेरे से निकल अपने मन की करने वाली औरत निर्लज, कुलटा मानी जाती है। 'आवारा न बन' की 'नीलू', 'मैने महाभारत देखा है, की ब्रजेष, 'रायप्रवीण की सावित्रीं, 'जवाबी कागज' की 'तनुश्रीं न जाने मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों की कितनी नारी पात्रो को परिवार और समाज ने ये उपाधियां प्रदान की है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहारियों में विवाह के नकारात्मक पहलुओं को उजागर अवश्य किया है परन्तु वे विवाह के नकार की बात नहीं करती। उनके अनुसार विवाहित होने पर भी स्त्री आवाज आवश्यक है। नारी को पुरूष के समान अधिकार मिलने चाहिए। इसलिए उनकी कहानियों की नारी अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत दिखाई पड़ती है और अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है। उन्होनें नारी को जागरूक किया है कि उसे शिक्षित होकर इस विवाह रूपी संसार के कठोर नियमों को बदलना होगा और समाज में स्त्री को अपना नया स्वरूप गढ़ना होगा।

परम्परागत सांस्कृतिक मूल्य और नारी

परम्परा का संबंध हामरे अतीत से होता है। परम्पराओं द्वारा जो निश्चित व्यवहार, प्रतिमान प्रस्तुत किए जाते हैं, व्यक्ति इन्हीं निश्चित प्रतिमानों के अनुसार ही व्यवहार करता है। क्योंकि परम्पराएं सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करती है और व्यक्ति परम्पराओं के मोहजाल को भंग नहीं कर पाता। नारी और पुरूष समाज के दो अभिन्न अंग है परन्तु दोनों के लिए इन मान्यताओं के पालन करने के मापदंड भिन्न हैं। नारी–पुरूष समाज के दो अभिन्न अंग है परन्तु दोनों के लिए इन मान्यताओं के पालन करने के मापदंड़ भिन्न है। नारी–पुरूष की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है, परन्तु दुर्बल है तो देह के स्तर पर जिसे रौंदकर पुरूष अपनी सबलता का परिचय नहीं देता बल्कि स्त्री के पैरों में वर्जनाओं की बेड़ियां डाल अपना पुरूषार्थ जताना चाहता है। वस्तुतः नारी हीन नही, वह हीन समझी जाती

है। मैत्रेयी पुष्पा नारी के वजूद और अस्मिता को लेकर अपने समूचे लेखन काल में चिंतित रही है और बदलते संदर्भो में नारी की सामाजिक स्थिति का आंकलन करने का उन्होने यथेष्ट प्रयास किया है।

आज की नारी सांस्कृतिक और सामाजिक विश्वासों से अलग होकर एक नई भावभूमि पर खड़े होकर अपने व्यक्तित्व को नियोजित करना चाहती है। 'उज्रदारी' कहानी की विधवा शंति पर जेठ–जेठानी तरह–तरह के जुल्म करते हैं। आधी जायदाद की मालकिन होने पर भी उसे मजदूर बनाया जाता है परन्तु अमानवीय अत्याचार सहते–सहते उसमें अलौकिक शक्ति का संचार होता है और वह अपने हिस्से की जमीन लेने के लिए दावा करती है। घर से भाग कर प्रधान के साथ मिलकर दरखास्त देती है। वह स्पश्ट जवाब देती है– 'हक मार लोगे किसी का? मैं सरकार–दरबार लडूंगी।''[5] 'ताला खुला है पापा' की बिन्दो समजातीय विवाह की मान्यता का विरोध करती है। वह नाऊ अरविन्द से प्रेम करती है, उसका प्यार जाति–पाति के बंधन को नही मानता।

मैत्रेयी ने अपनी कहानियों में सामाजिक मान्यताओं का विरोध 'तब और अत' के रूप में मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। कर्म आधारित व्यवस्था में नारियों का स्थान कितना महत्वपूर्ण था, यह उनकी कहानी 'रिजक' परिलक्षित होता है। बसोर जाति की स्त्रियों का कार्य बच्चे जनवाने का था, समय परिवर्तन ने यह परम्परा समाप्त करवा दी, जिसे लल्लन ने जो प्रसूति कार्य करती थी, स्वीकार किया। उसका कार्य परिवर्तित हो गया– ''लल्लन मेम बनकर आई है....जिस तरह आई, उसी तरह रही। उसी पोशाक में, उसी अदा से, उसी इल्म के साथ.... ।''[6]

मैत्रेयी की नारी प्रहार नहीं करती बल्कि वह समाज द्वारा किए जाने वाले लड़की वाले लड़की और लड़के के भेद का विरोध करती है। परम्परा ने लड़के और लड़की दोनों के लिए अलग–अलग पाबंदियां बनाई। परम्पराएं तोड़ने पर बेटी निन्दित होती हैं और बेटा वंदित दिखाई देता है। इस निन्दित और वंदित के बीच नारी के आक्रोश को मैत्रेयी के नारी पात्रों

में स्व मिला है। 'पगला गई हो भागमती' कहानी के भागों का आक्रोश जब फूटता है तो वह अपने जीजा ठाकुर साहब पर विष बुझे बाणों की तरह 'नुकीले और धारदार' पत्थरों की बौछार करती है। ठाकुर साहब उस परम्परा के प्रतीक हैं, जिसमें बेटा और बेटी के लिए अलग कायदे और पाबंदियाँ हैं। भागों का आक्रोश उस परम्परां पर है, ठाकुर साहब ने अपनी बेटी अनसुइया को जहर दे दिया। क्योंकि वह किसी और जाति के पुरूश के विवाह कर गर्भवती थी और जब बेटे ने परम्परा तोड़ दूसरी जाति की कन्या से विवाह किया तो उसे सम्मानित किया गया। तभी भागोंइस दोहरी नीति पर फटकार लगाती है–''बेटे की गलती दिखाई नहीं देई तुम्हें?...जा कौन असल ठाकुर की जाई है, आज दे दे बेटे को जहर..... जैसे मेरी अनसुईया का... ।''[7]

बलात्कार को समाज के दृष्टिकोण से देखें तो यह मात्र अपराध है, जिसमें बलात्कार करने वाले अपराधी के स्थान पर बलात्कार की शिकार स्त्री पर समाज की नजर टिकती है। 'बटेलिए' कहानी में भोली बलात्कार का शिकार होकर गर्भवती होती है। माँ भी अपनी बेटी पर लाँछन लगाती है परन्तु कहानी की मुख्य पात्र गिरता सबका विरोध करते हुए केस को पुलिस तक पहुंचाती है क्योंकि बलात्कार करने वाला का दोष ही अधिकर है। मैत्रेयी के नारी पात्र उस मध्यकालीन मानसिकता को तोड़ते प्रतीत हो हैं, जिससे 'बलात्कार' जैसा शब्द अपना जाल ही न बुन सकें। उनकी नारी थोथी मान्यताओं में छटपटाती नहीं बल्कि उस जाल को काटती है। नारी की मौन छटपटाहट को मुखर वाणी देकर सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं पर करारी चोट की है।

पुरूषवादी मानसिकता का विरोध

सहस्त्रों वर्षो से भारतीय पुरूश–सुरक्षात्मक समाज नारी को वर्जनाओं का विष पिलाता रहा है पर अब नारी शक्तिरूपा है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। यह संघर्श समाज से है, रूढ़ियों से है, थोपी गई परम्पराओं से है और पुरूष के अहम् में लिपटी मानसिकता से है। 'रास' कहानी की जैयन्ती ससुर के यौन

शोषण के प्रयास पर चप्पलों से उसकी पिटाई करती है और साथ ही ऐलान करती है– ''सवेरे मुँह अंधियारे मेरे पीहर पहुंच आना, नही तो हल्ला कर दूंगी।''[8]

पुरूष युगों से सही मानता आ रहा है कि निर्णय का अधिकार केवल उसी का है परन्तु आधुनिक युग में नारी पुरूषों के समान अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए दांव–पेच आजमाने लगी है। 'सेंध' कहानी की कलावती विधवा है। उसका पति समाजसेवा के कार्यो में अपनी जमीन–जायदार भी लगा देता है। पति की मृत्यु के बाद कलावती उन्हीं कल्याणकारी कार्यो का फायदा उठा कर विभिन्न समिति की सदस्या तो बनी, साथ ही सफल राजनेत्री भी और राजनेताओं की तरह दांव–पेंच से अपनी समृद्धि को बढ़ाती है। शिक्षा प्राप्त कर नारी जहाँ अपने अधिकारों को प्राप्त करती है, वहीं दूसरी नारियों पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध भी आवाज उठाती है। 'संबध' कहानी की गौरा जो षिक्षित है और पत्र–पत्रिकाओं में लिखती है। वह अपने दादा व कक्का जिन्होंने फूलवती के पति का इलाज करवाने की एवज में उसका यौन शोषण किया, की काली करतूतों का भण्डाफोड़ कर उनके मुँह पर कालिख मलती है। वह किताब लिखकर अपनी जागृत चेतना का प्रमाण देती है। वह कहती है– ''शिकारियों के डर से कहीं शेरनी छिपती है? हाँ, शेरनी के डर से षिकारी भले ही छिप कर वार करें, लेखकर किसी भी शेर से कम नहीं।''[9]

आज अपने विषयों, मुदों समस्याओं के बारे में सोचने लगी है और उसकी चेतना अनुकूलित, अनुशासित हो रही है।

विवाहेतर सम्बन्ध और नारी

विवाहेत्तर प्रेम प्रसंगो का विचारशील और बेबाक चित्रण हिन्दी साहित्य में हुआ है। आज नारी इस निष्कर्ष पर पहुंचने लगी है कि उसका अभिष्ट पुरूष नहीं है, न पति, न आदर्श प्रेमी की तलाश बल्कि अपने व्यक्तित्व को सशक्त बनाना है, जिसमें पुरूष सुरक्षात्मक मूल्यों को पालती–पोसती दिखाई देती है, वहीं उनकी चेतना दासता की बेड़ियों को तोड़ने की चुनौती भी देती है। इससे मुक्ति की नई युक्तियां भी तलाशनी हैं। 'गोमा हँसती है' की

गोमा बदसूरत किड्डा सिंह को कया कहता है परन्तु प्रेम उसे बलि सिंह से है और उसके एक बेटे की माँ भी वह बन गई है। ये कहानी स्त्री के इस भाव की अभिव्यक्ति है कि मन कहीं भी रम सकता है। अनामिका के अनुसार 'गोमा हँसती है' में मैत्रेयी पुष्पा एक बिलकुल अलग तरह के ठस्सेदार देहातिन से मुखातिब है ''बूढ़े पति से उसे कोई बैर नही, पर मन जहां रमता है, वहीं रमता है। वह नियति को अस्वीकार करते हुए तन कर खड़ी ही नहीं होती बल्कि अपने हम के लिए विद्रोह भी करती है।''[10]

आज की नारी अपना काम निकालने के लिए विवाहेत्तर संबंध स्थपित करने को उचित ठहराती है। 'उज्रदारी' की विधवा शांति जेठ–जेठानी के जुल्मों से भाग कर और अपनी आधी जायदाद को हाासिल करने के लिए प्रधान से अवैध संबंध स्थापित करती है और उनकी सहायता से जायदाद लेने के लिए जेठ–जेठानी पर मुकदमा करती है। मैत्रेयी की कोई भी नारी पात्र इन विवाहेतर संबंधों के कारण समाज की परम्पराओं के दबाव से आत्महत्या न करके समाज से टक्कर लेती नजर आती है।

नारी के विभिन्न सामाजिक संबंध

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में नारी की आधुनिक छवि अंकन नही किया बल्कि एक ठोस छाप छोड़ी है, जो परम्परागत पारिवारिक छवि के अतिक्रमण का दर्शन भी है। समाज और पारम्परिक दायित्वों में बदलाव में बदलाव के साथ–साथ नारी ने पारम्परिक भूमिका के खोल को तोड़कर युगानुरूप नए दायित्वों को वहन करने की क्षमता और नए गुणों के साथ समाज समाज और परिवार में अपने तालमेल की नारी प्रतिभा का प्रदर्शन उनकी कहानियों का प्रमुख स्वर है। उनके आदर्श तो वे नारी पात्र हैं, जो निकट परिस्थितियों में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा कर संघर्ष के बल पर नारी की सकारत्मक छवि को प्रस्तुत करते है। नारी संबधों में सबसे महत्वपूर्ण माँ है, जो सृजन का दूसरा नाम है। मैत्रेयी ने नारी के परम्परागत रूढ़ रूप को चित्रित करने के साथ–साथ ऐसी माँओं के अपनी कहानियों में पिरोया है, जिन्होने समय के साथ स्वयं को तिनके–सा होने नहीं दिया और रूढ़ियों में एक

नया मोर्चा खोला है। एक और 'रास' की जैमन्ती जब यौन शोषण का शिकार होकर अपने घर वापिस भाग आई तो माँ ने उसे दिलासा देने की बजाए उसे दोषी माना और ससुराल में माफी मांगने को कहा। 'बेटी कहानी में मुन्नी की माँ भी पितृ–सतात्मक समाज की रूढ़ियों में जकड़ी हुई हैं। मुन्नी जब माँ से आग्रह करती है कि वह बेटों की तरह पढ़ना चाहती है तो माँ उसे दुत्कार देती है–''तू लड़कों की बराबरी करती है। बेटे तो बुढ़ापे की लाठी हैं हमारी, हमें सहारा देंगे। तू पराए घर की दलिद्दर। तेरी कमाई नहीं खनी हमें, कह दिया।''[11]

दूसरी ओर मैत्रेयी में ऐसी माँओं को भी उजागर किया है। जो अपनी बेटियों को सामाजिक विषमताओं को जूझने की प्रेरणा देने के लिए निरन्तर मार्गदर्शन करती रहती है। 'मुस्कराती औरतें' कुसुम की माँ ऐसी है, जो विवाह से अधिक कैरियर को महत्व देती है। वह अपनी बेटी को समझाती है–''उन औरतों को देख जो कामकाजी महिला होने के लिए नौकरीपेशा बनने के लिए विवाह बंधन तोड़ गई या उन्हें देख जिन्होनें अपने कैरियर पहले अर्जित किया, उसके बाद विवाह।''[12]

मैत्रेयी की कहानियों की बेटियाँ किसी प्रकार का अन्याय सहन नहीं करती। चाहे वह कैरियर से संबंधित हो या विवाह से। 'मैनें महाभारत देखा है, की ब्रजेश, 'आवारा न बन की नीलू ऐसी ही बेटियाँ हैं, जो परिवार का विरोध करके अपना कैरियर बना कर अपने अलग व्यक्तित्व की छाप छोड़ती है। 'छुटकारा' कहानी में छन्नो दलित नारी है, जो गलियों की सफाई करती है। उसकी बेटी रज्जो शिक्षित होकर जान गई है कि वे भी सम्मान से जी सकते हैं। छन्नो ब्राह्मणों की गली में मकान बना कर रहती है और सफाई का काम बंद कर देती है। रज्जो लोगों के अत्याचारों का जवाब पुलिस बुला कर देती है और अपनी माँ को नरकीय जीवन से छुटकारा दिलाती है। 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में पति के विरूद्ध पत्नी द्वारा राजनीतिक मोर्चा खोलते हुए दिखाया गया है। प्रीतम सिंह अपनी पत्नी सुशीला को उम्मीदवार के रूप में खड़ा करता है और जताता है कि उसकी हैसियत से ही सुशीला को वोट मिलेंगे। सुशीला अपने पक्ष को रखती है– ''हम पति–पत्नी के रिश्ते में बंधे हैं, ठीक है

पर लोगों की नजरों में तो हमारे अलग–अलग वजूद है। हम अलग स्वभाव, अलग तासीर के दो अलग–अलग प्राणी हैं।''[13]

इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी के विविध स्वरूप का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि उन्होने नारी के मौन को तोड़ा है। उनकी दृष्टि महानगरीय चकाचौंध से पोषित नारी पर नहीं अपितु ग्रामीण नारी पर है। जहाँ रूढ़िवादिता–थोथी परम्पराओं और लिजलिजे संबंधो का अब भी अंधकार है। नारी के भोग्या, देवीय गुणों की थोथी मानद उपाधियों को इनके नारी पात्रों ने उतार फेंका है। वह ममता की देवी, कुलवधू, गृह लक्ष्मी जैसी डिग्रियां लेने को तैयार नही। उनके नारी पात्र मुक्त गन में विचरण करना चाहते हैं और इसके लिए वे अपने पंखो की उड़ान शक्ति को तौलते हैं, अपने सामर्थ्य को स्वयं तलाशते हैं।

संदर्भ–

1. मैत्रेयी पुष्पा, मुस्कराती औरतें, पृ. 16
2. मैत्रेयी पुष्पा, मन नाहीं दस बीस, पृ. 71
3. मैत्रेयी पुष्पा, साँप–सीढ़ी, पृ. 94
4. मैत्रेयी पुष्पा, बारहवीं रात, पृ. 914
5. मैत्रेयी पुष्पा, उज्रदारी, पृ. 123
6. मैत्रेयी पुष्पा, रिज़क, पृ. 20
7. मैत्रेयी पुष्पा, पागला गई हो भागमती, पृ. 31
8. मैत्रेयी पुष्पा, रास, पृ. 145
9. वही, पृ. 116
10. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, मयूर विहार, दिल्ली–110091 प्रथम संस्करण–1999, पृ. 137
11. मैत्रेयी पुष्पा, बेटी, पृ. 94
12. मुस्कुराती औरतें, पृ.13
13. मैत्रेयी पुष्पा, शतरंज के खिलाड़ी, पृ.29